भिक्खु संघाज युनायटेड बुद्धिस्ट मिशन द्वारा आयोजित बौद्ध समाज सम्मेलन के उद्‌घाटन के अवसर पर भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील का अभिभाषण

मुंबई, 18 अप्रैल, 2010

मुझे भिक्खु संघाज युनायटेड बुद्धिस्ट मिशन द्वारा आयोजित बौद्ध समाज सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह मिशन गत अनेक वर्षों से सामाजिक, सांस्कृतिक और शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न कार्य कर रहा है।

किसी भी समाज की नींव शांति, सौहार्द, करुणा और नैतिक मूल्यों पर टिकी होती है। एक सुदृढ़ समाज निर्मित करने के लिए हमें इन गुणों को बढ़ावा देना और प्रोत्साहित करना होगा। मैं चाहूंगी कि हमें ऐसी विचारधारा को देश के हर कोने में फैलाने के लिए निरंतर प्रयास करने चाहिए। आज का सम्मेलन इसी विषय पर आधारित है जो कि सामयिक है।

मुझे बताया गया है कि बौद्ध भिक्खु संघ की ओर से मुंबई में मैत्री, करुणा, समता की भावना बढ़ाने के लिए 2 अप्रैल से 17 अप्रैल तक 'भिम ज्योत' निकाली गई। मैं कामना करती हूं कि इस ज्योत का प्रकाश लोगों के मन में सदैव बना रहे। समाज में समता और समरसता बनाए रखने के लिए हमारा क्या योगदान हो सकता है? दूसरों की हम क्या मदद कर सकते हैं? दूसरों की पीड़ा को कैसे दूर किया जा सकता है? इस बारे में हम सबको विचार करना चाहिए।

आज से सदियों पहले, दूसरों की पीड़ा को देखकर, राजकुमार सिद्धार्थ के मन में भी यही विचार उठते थे। परपीड़ा से विचलित होकर उन्होंने अपने राजमहल की सुख-सुविधाओं का परित्याग किया। सत्य व ज्ञान की खोज में निकल पड़े और संन्यासी बन गए। वह उन उपायों के बारे में गहनता से चिंतन करते थे जिनसे दुख और शोक से पीड़ित मानव का उद्धार हो सके। अंततः अनेक वर्षों की साधना के फलस्वरूप, गया में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। वह सिद्धार्थ से 'बुद्ध' हो गए।

महात्मा बुद्ध को, समस्त मानव जाति के दुखों और उसके निवारण के बारे में, ज्ञान के रूप में चार आर्य सत्य प्राप्त हुए। उन्होंने बताया कि संसार दुखमय है, उस दुख के कारण हैं, दुख का निदान है और दुख के निदान का मार्ग भी है। उन्होंने अविद्या और तृष्णा को दु:ख का मूल कारण माना। दुखों को नियंत्रित करने के लिए अष्टांगिक मार्ग अर्थात् सम्यक दृष्टि और सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी और सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका और सम्यक प्रयत्न, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि को अनिवार्य बताया।

महात्मा बुद्ध का करुणा और मानवता का संदेश दूर-दूर तक फैला। लोगों में इसके साहित्य और शिक्षा में रुचि पैदा हुई। इसे जानने के लिए विदेशों से अनेक विद्वान यहां आए। इन विद्वानों ने बौद्ध धर्म के विचारों का अनुशीलन किया। उन्होंने यात्रा वृत्तांत लिखे जिनमें उन्होंने हमारी समृद्ध परम्पराओं, संस्कृति और धरोहर का वर्णन किया। साथ ही प्राचीन विश्वविद्यालय नालंदा का भी उल्लेख किया।

महात्मा बुद्ध ने सामुदायिक भावना को विकसित करने के लिए संघ की स्थापना की थी। संघ में समाज के विभिन्न वर्गों के लोग शामिल हुए। इसके कार्य लोकतांत्रिक ढंग से संपन्न होते थे। संघ द्वारा अपने मतभेदों को सर्वसम्मति से हल किया जाता था और निर्णय भी मतदान द्वारा होते थे। संघ एक ऐसी विचारधारा है, जो हमें आपस में मैत्रीपूर्ण ढंग से रहने और एकजुट होकर कार्य करने की प्रेरणा देती है।

बौद्ध धर्म मध्यम मार्ग अपनाने पर बल देता है। महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में भिक्षुओं से पालि भाषा में कहा था—

''दभो अंते,
अनुप गम्म,
मंझिया पटिपादा''

अर्थात् दो अतियों को छोड़कर मध्यम पथ को अपनाओ। उनके अनुसार यह एक ऐसा रास्ता है जिससे मन में शांति आती है और अनेक विचार सहजता से समझ

में आ जाते हैं। उनका यह उपदेश हमें जीवन में असंतुलन और अतिशयता का परित्याग करने की शिक्षा देता है। मैं समझती हूं कि विचारों और कार्यों में संतुलन बनाए रखते हुए मध्यम मार्ग पर चलकर हम समाज का अधिकतम कल्याण कर सकते हैं। वास्तव में यह हमारी श्रेष्ठ परम्परा का एक विशिष्ट गुण है। संस्कृत में भी कहा गया है, 'अति सर्वत्र वर्जयेत्'। अर्थात् हद से ज्यादा हर चीज बुरी होती है। हमें अपने जीवन में इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

महात्मा बुद्ध की शांति, अहिंसा और मानव-सेवा की शिक्षाओं ने इतिहास के विभिन्न चरणों में हमारे देश के महापुरुषों को प्रभावित किया। भारत के महान सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद हिंसा का पूरी तरह से त्याग किया। उन्होंने मानव कल्याण के अनेक कार्य किए। वास्तव में जन कल्याण ही उनके राज्य का एक मार्गदर्शक सिद्धांत बन गया था। महात्मा गांधी जी ने अहिंसा के विचार को अपनाकर भारत को स्वतंत्रता दिलवाई। मानव इतिहास में ये विचार अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इन विचारों पर आधारित विवेकपूर्ण निर्णयों से, हम विभिन्न समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

देश की आजादी के बाद संविधान मसौदा समिति बनाई गई और डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर उसके अध्यक्ष नियुक्त किए गए। वे एक प्रकाण्ड विद्वान, मानवतावादी तो थे ही, साथ ही वे विधि, संविधान विशेषज्ञ होने के कारण हमारे संविधान के प्रमुख वास्तुकार भी थे। संविधान के निर्माण में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को सदैव याद रखा जाएगा। संविधान में समाहित न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे की संकल्पना विश्व के विशाल लोकतंत्र भारत का मार्गदर्शन कर रही है।

डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर उत्पीड़ित और आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के उत्थान के लिए जीवन भर कार्य करते रहे। उनकी संकल्पना समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के आधार पर एक आदर्श समाज स्थापित करने की थी और वह समाज में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा को एक महत्त्वपूर्ण साधन मानते थे। कमजोर वर्गों को शिक्षित करने के लिए उन्होंने अनेक संस्थानों की स्थापना की थी।

हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम उनके विचारों और कार्यों को आगे बढ़ाएं। मैं समझती हूं कि आप जैसी संस्थाएं इसमें अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

समावेशी विकास और राष्ट्र की प्रगति हमारी प्राथमिकता है। बौद्ध धर्म में समाज से भेदभाव समाप्त करने पर बल दिया गया है। समाज में समानता स्थापित करने के लिए उपेक्षित, वंचित और उत्पीड़ित लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना होगा। इसके लिए सरकार द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाएं चलाई गई हैं। इन विभिन्न योजनाओं का लाभ निर्धनतम व्यक्ति तक पहुंचे, इसके लिए सरकार प्रतिबद्ध है। लेकिन सरकार की योजनाओं को सफल बनाने में सभी का सहयोग अपेक्षित है। इस ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

अंत में, मैं यह कहना चाहूंगी कि यदि हम महात्मा बुद्ध और बाबा साहेब अम्बेडकर की शिक्षाओं का अनुसरण करेंगे, उनके बताए मार्ग पर चलेंगे तो एक समतापूर्ण समाज का निर्माण कर सकेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं इस सम्मेलन को आयोजित करने के लिए बुद्धिस्ट मिशन को बधाई देती हूं और उनके प्रयासों की सफलता की कामना करती हूं।

धन्यवाद,

जय हिन्द।